संपादकीय

वैसे तो समय अथवा काल का हर क्षण, हर पल, हर दिन, हर महीना अपने आप में विलक्षण होता है क्योंकि वह फिर उसी रूप में कभी घटित नहीं होता है, न जिया जा सकता है। दूसरी ओर समय के सापेक्षता व अन्य सिद्धाँत इसे अमूर्त, मतिभ्रम व भ्रमासक्ति के रूप में भी देख समझ रहे हैं। परंतु अवधारणाओं और सिद्धांतों के जाल जंजाल से परे तन और मन को महसूस होने वाला मूर्त सत्य तो यही है कि अक्टूबर का महीना भी अन्य महीनों की भांति होते हुए भी बारह महीनों में सबसे अनूठा है। इस माह में कभी घटाटोप घनमंडल के साथ ही सावन जैसी फुहार आती है, तो कभी ग्रीष्म ऋतु ना होने के बावजूद अक्टूबर की बदनाम 'ऑक्टेन हीट' की असहनीय गर्मी मिनटों में ही पसीने से तरबतर कर देती है।

जनजातीय साहित्यकार देश के नव सृजन में सहभागी बनें

वरिष्ठ शिक्षक, आदिवासी साहित्यकार एवं पुरातत्वविद **घनश्याम सिंह नाग** से **मधु तिवारी** की बातचीत

प्र. प्रारंभ से ही आप बस्तर अँचल में रहे, पले बढ़े और शिक्षक के रूप में आपने अपनी सेवा भी पूर्ण की। मैं जानना चाहती हूँ कि साहित्य के प्रति आपका अनुराग कैसे जागा?

उ. मेरा जन्म कांकेर जिले के दूरस्थ ग्राम हाटकोंगेरा में हुआ। प्राथमिक शिक्षा गाँव में पूर्ण होने के बाद 6 वीं से 11 वीं तक शिक्षा के लिए खेतों के बीच पगडंडियों से होकर पैदल 8 कि. मी. (जाना-आना 16 कि.मी.) प्रतिदिन चलना पड़ता था। रास्ते में पहाड़ी और नदी भी पार करना पड़ता था। तुलसी दास की चौपाई "फूले कास सकल महि छाई" प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्र नंदन पंत की "लह-लह पालक, मह-मह धनिया" आदि जो स्कूल में पढ़ाया जाता था रोज उसे हम देखते व अनुभव करते थे तो स्वाभाविक रूप से हमारे मन में भी कुछ लिखने का मन होता था।

में प्रकाशित हुई। मुझे रचनाकार प्रति डाक से मिली, उसमें अपना नाम प्रकाशित देखा तो मन में अपार खुशी हुई। फिर दण्डकारण्य समाचार से (जो अब दैनिक हो गया है) मुझे भरपूर सहयोग व प्रोत्साहन मिला। दण्डकारण्य समाचार और संपादक तुषार कांति बोस जी के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

प्र. बस्तर के अति संवेदनशील क्षेत्र में आपने लंबे समय तक अध्यापन किया उससे जुड़ी कुछ अविस्मरणीय यादें हो तो आप हमें बतायें।

उ. वैसे तो सवा इकतालिस वर्षों की सेवा काल के बहुत सारे खट्टे-मीठे अनुभव हैं। लेकिन विशेष तौर पर मैं आपको बताना चाहूँगा कि नये-नये विद्यालय खोलने और संचालन करने का मेरा अलग रिकार्ड है। 1 प्राथमिक शाला, 4 माध्य. शाला, 1 उ.मा.शाला 1 कन्या आश्रम प्रारंभ किया। ग्राम प्रधानचेर्रा

श्री घनश्याम सिंह नाग
पिताः स्व. भागरिथी नाग
माताः स्व. बरमत नाग
पताः ग्राम पोस्ट-बहीगाँव, तह. केशकाल, जिला-कोण्डागाँव, छ.ग. पिन 494230
मो. 94242-77354

मधु तिवारी
संपादन सहयोगी, ककसाड़
मो. 97131-25160

मा. शा. खोलने का आदेश हुआ घास